

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

अनुस्वारः (1. अनु + स्वार) m. *Nachklang, das nasale Lautelement eines nasalirten Vocals: अनुस्वारो व्यञ्जनं चात्तराङ्गम्* RV. Prāt. 1, 5. VS. Prāt. 8, 16. P. 8, 3, 4. 23. 4, 58.

अनुस्वारवत् (von अनुस्वार) adj. *mit dem Anusvāra versehen* P. 8, 3, 10, Sch.

अनुक्त m. N. pr. ein Sohn Vibhrātra's (Vibhrāga's) und Vater Brahmadatta's VP. 452. — Vgl. **अणुक्त**.

अनुकरत् (von कर् mit अनु) verstärkt in Ableitungen beide Glieder (**अनुकौ**) gaṇa अनुशतिकादिः.

अनुकूर्त् (von कूर्त् [क्त्वा], कृत्वत् [क्त्वे] mit अनु) m. *Aufreizung* AV. 19, 8, 4.

अनुकार (von कर् mit अनु) m. 1) *Nachahmung* AK. 3, 3, 17. — 2) *Gleichheit* H. 1463.

अनुकारक (wie eben) adj. *gleich, ähnlich: सुतं तु लङ्घनं पत्तिमृगगत्यनुकारकम्* H. 1248.

अनुकार्य (von कर् mit अनु) m. (sic) = **अन्वकार्य** AK. 2, 7, 31, Sch.

अनुकौ (1. अनु + कौ) verstärkt in Ableit. beide Glieder (**अनुकौ**) gaṇa अनुशतिकादिः.

अनुक्राद् (von क्राद् mit अनु) m. N. pr. ein Sohn Hiraṇjakaçipu's HARIV. 187. 12439. 13006. R. 4, 39, 6. Vgl. Ind. St. I, 414. 417. und **अनुक्राद्**, **क्राद्**, **प्रक्राद्**, **संक्राद्**.

अनुक्राद् (von क्राद् mit अनु) m. = **अनुक्राद्** MBh. 1, 2526. VP. 124.

अनुक् (von अञ् mit अनु) *eine gerade fortlaufende Richtung einhaltend.*

1) m. n. *Rückgrath*, insbes. *dessen oberer Theil: प्रतीच्यां दिशि भूतदेमस्य धेक्षुत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेक्षि पार्श्वम् । ऊर्ध्व्यां दिश्यैत्रस्यार्त्नकं धेक्षि दिशि ध्रुव्यां धेक्षि पात्रस्यम् । अतारिने मध्यतो मध्यं धेक्षि ।* AV. 4, 14, 8. **अनुक्रादप्यणीरुक्षिकाभ्यः शीर्ष्ठा रोगमनीनशम्** 9, 13, 21. ÇAT. Br. 3, 8, 3, 27. (Sāj.: अनुक्रो वज्राधार आयतः पृष्ठास्थिविशेषः; Sch. zu KĀTJ. ÇR. 6, 8, 11: कायव्याः। सद् चीनके च गृह्यते: AIR. Br. 7, 1. Sāj. zu dies. St. citirt: अनुक्रो मूत्रवस्तिः स्यात्सान्नेत्येको वदति च. — 2) *der den Rückgrath des Feueraltars bildende Streifen: अयुगमगणमध्यमानुके* (Sch.: अयुगो य इष्टकागणस्तस्य मध्यमा अनुके उपधेया) एका च । अभितो युगाः KĀTJ. ÇR. 16, 7, 22—24. 17, 2, 16. 3, 11. 6, 2, 5. 8, 22. u. s. w. — 3) n. *Geschlecht, Familie* AK. 3, 4, 13. H. an. 3, 3. MED. k. 42. Vgl. **अन्वय**. — 4) n. *Eigenthümlichkeit des Geschlechts, Temperament, Charakter* (शील) AK. H. an. MED. व्यावर्त्तनकुलानुके: पित्तकाः नराः स्मृताः Suçr. 1, 333, (323 gedr.) 19. 8. — 5) m. *frühere Geburt* H. an. MED. — 6) f. °का N. pr. einer Apsaras HARIV. 12470. 14162. — Vgl. **अन्वञ्**.

अनुकार्ष (von कार्प् mit अनु) m. 1) *Nachschein: उत्तरेण प्रकाशेनात्तरमनुकाशेन वाङ्मम्* VS. 23, 2. अथो किरणयज्योतिषैव यज्ञमानः स्वर्गं लोकमेत्यथो अनुकाशमिदं तं कुरुते स्वर्गस्य लोकस्य समष्टौ ÇAT. Br. 13, 2, 2, 16. न तस्मिन्नुपयज्यस्येत्यादनुकाशः स्यात् er mache ihn (इमशानम्) nicht an einem Orte, der von hier aus sichtbar ist 8, 1, 12. साकाशस्य सातीकाशस्य सानुकाशस्य सप्रतीकाशस्य (अग्नेः) Âçv. GṚHJ. 3, 9. — 2) *Hinblick, Rücksicht: अनुनैवानुकाशेन* (Sāj.: दृष्टत्वेन) यद् इन्द्रः सारथिरिव भूत्वेदजयत् im Hinblick darauf, dass Indra u. s. w. AIR. Br. 2, 25.

अनुक्त (von वच् mit अनु) 1) adj. a) *nachgesprochen, recitirt, im Text* (instr.) *stehend: तस्माद्यथैवर्चानुक्तमेवानुव्रयात्* (Sāj.: यदैव वेदे पठितम्) ÇAT. Br. 1, 4, 1, 35. यदै किं चानुक्तं तस्य सर्वस्य ब्रह्मोत्पेवता 14, 4, 3, 26.

= BRH. AR. UP. 1, 3, 17. — b) *studirt* (bei einem Lehrer): **अनुक्त** (वेदे) ÇAT. Br. 14, 4, 2, 28. = BRH. AR. UP. 1, 4, 15. — 2) n. a) *Nacherwähnung, wiederholte Erwähnung* VOP. 3, 144. Vgl. **अनुक्ति** und **अन्वदिश**. — b) *Veda-Studium* ÇAT. Br. 3, 2, 4, 16. 5, 3, 11. 4, 3, 6, 5. 6, 1, 14. 14, 2, 2, 46. Vgl. **अनुवचन**.

अनुक्ति (wie eben) f. 1) = **अनुक्त** 2, a. VOP. 3, 132. — 2) *Veda-Studium: अनुनक्ति* der den Veda noch nicht studirt hat KĀTJ. ÇR. 26, 2, 4.

अनुक्त्वा (von अनुक्त्वा) n. 1) *Rückgrath: मीवाभ्यस्त उक्षिकाभ्यः कीकिसाभ्यो अनुक्त्वात् । यद्वं दीपाय्यं संसाभ्यो ब्राह्मभ्यो वि वृक्षामि ते* RV. 10, 163, 2. **संसा यस्यानुक्त्वा** AV. 9, 6, 1. खलः पात्रं स्फावंसोवशि अनुक्त्वा 11, 3, 9. — 2) *das Fleisch am Gehirnschädel* ÇAT. Br. 3, 8, 3, 11.

अनुचार्त् (part. med. von वच् mit अनु) P. 3, 2, 109. adj. 1) *dem Studium obliegend, gebildet, gelehrt* (von Brahmanen): *यो अनुचानो ब्राह्मणो युक्तं श्रीसीत्का स्वित्तस्य यज्ञमानस्य संवित्* nach VALAKH. 8. eingeschoben (Par. Mpt). *दत्तवालाकिर्दानुचानो* (ÇAṆK.: अनुवचनसमर्थो वक्ता वाग्मी) गार्ग्य आस ÇAT. Br. 14, 5, 1, 1. (= BRH. AR. UP. 2, 1, 1.) तस्य ह जनकस्य वैदेहस्य विजिज्ञासा बभूव कः स्वदेषो ब्राह्मणानामनुचानतम इति 6, 1, 1. (= BRH. AR. UP. 3, 1, 1.) 1, 3, 3, 8. 7, 2, 3. 8, 1, 28. 3, 1, 1, 5. 11. 5, 3, 12. 6, 1, 29. 4, 3, 1, 4. 5, 6, 5. 6, 1, 14. 5, 3, 2, 3. 6, 1, 1, 10. 14, 2, 2, 46. 7, 2, 26. रामो काम मार्गवेयो ऽनुचानः श्यापणीयः AIR. Br. 7, 27. ये ब्राह्मणामनुचानं पशो नर्हेत् 5, 2, 3. LĀTJ. in Ind. St. I, 51, 17 (Sch.: शिष्येभ्यो विद्यासंप्रदानं यः कृतवान्) न ह्यप्यनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः । ऋयपश्चक्रिरे धर्मो यो ऽनुचानः स नो महान् ॥ M. 2, 154. ब्राह्मणे चाननुचाने 242. अनुचाने तथा गुरौ 3, 82. गुर्वत्तेवास्वनुचानमातुलश्रान्त्रियेषु JĀç. 3, 24. Nach den Lexicographen: *mit dem Veda und den Anga's vertraut* AK. 2, 7, 9. H. 78. an. 4, 156. MED. n. 160. = *विप्रभेद* TRIK. 3, 3, 227. — 2) *bescheiden* TRIK. H. an. MED.

अनुची s. u. **अन्वञ्**.

अनुचीर्त् (von अन्वञ्) adj. *auf einander folgend: देवेभ्यो हि प्रथमं पुत्रिभ्योऽनुचानं सुवसि भागमुत्तमम् । आदिदामानं सवितृर्गुणेषु ऽनुचीना ज्ञात्रिता मानुषेभ्यः ॥* RV. 4, 54, 2. **अनुचीनर्गर्भे** aus hinter einander folgenden Geburten stammend: गावौ ÇAT. Br. 5, 3, 1, 8. **अनुचीनाह्मम्** adv. *Tag für Tag* 2, 4, 4, 6. 5, 3, 1. an auf einander folgenden Tagen 5, 2, 5, 13.

1. **अनुच्य** (part. fut. pass. von वच् mit अनु) zu *studiren* KĀTJ. ÇR. 18, 4, 20. 24. 5, 1.

2. **अनुच्य** (von अन्वञ्) n. *das Langbrett eines Bettes: आसन्दो समभरन् । तस्यां प्रीप्सञ्च वसत्तञ्च द्वौ पादावास्तां शरञ्च वर्षाश्च द्वौ । बुरुञ्च रथेत्तरं चोनुच्येऽं आस्तां यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च तिरश्चे* । AV. 15, 3, 3—5. चतुःस्रक्तयः पादा भवन्ति चतुःस्रक्तान्यनुच्यानि ÇAT. Br. 6, 7, 1, 15. चत्वारः पादाश्चत्वार्यनुच्यानि 28. KAUSH. UP. in Ind. St. I, 401, 23. (ÇAṆK.: दक्षिणोत्तरयोर्दोर्धे खट्वाङ्गे अनुच्यसंज्ञे Ind. St. I, 140, 1.) अरत्रिमात्राणि शीर्षणानुच्यानि AIR. Br. 8, 5. **अनुच्ये** (Sāj.: पार्श्वद्वर्तिनी पालके) 12.

अनुचा (3. अ + ऊठा von वक्त्) f. *ein unverheirathetes Frauenzimmer* SĪH. D. 36, 9.

अनुत्ति (3. अ + उति) f. *Nicht-Hülfe: एवेदिन्द्रः सुकृत् ऋषो अस्तूती अनुत्ती* RV. 6, 29, 6.

अनुदक (3. अ + उदक mit Dehnung des Anlauts) n. *Mangel an Wasser, Dürre: यथा वर्षमनुदके* (am Ende des Verses) R. 1, 20, 16.

अनुद्य part. fut. pass. von वद् mit अनु ÇKDn.